ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

बड़े भाई साहब

कक्षा-दसवी

विषय-हिन्दी

पाठ -१

पाठ का नाम –बड़े भाई साहब

PPT-2

Website: www.odmegroup.org
Email: info@odmps.org
Toll Free: 1800 120 2316
Sishu Vihar, Infocity Road, Patia, Bhubaneswar- 751024

बड़े भाई साहब पाठ की व्याख्या

- मेरे भाई साहब मुझसे पाँच साल बड़े ,लेकिन केवल तीन दर्जे आगे। उन्होंने भी उसी उम्र में पढ़ना शुरू किया था ,जब मैने शुरू किया लेकिन तालीम जैसे महत्त्व के मामले में वह जल्दबाज़ी से काम लेना पसन्द ना करते थे। इस भवन की बुनियाद बहुत मज़बूत डालना चाहते थे ,जिस पर आलीशान महल बन सके।एक साल का काम दो साल में करते थे। कभी कभी तीन साल भी लग जाते थे बुनियाद ही पुख्ता न हो,तो मकान कैसे पायेदार बने।
- (लेखक अपने बड़े भाई साहब के बारे में बता रहा है कि वे पढ़ाई को कितना अधिक महत्व देते थे)
- शब्दार्थ
- दर्जा - कक्षा
  तालीम - शिक्षा
  बुनियाद - नींव
  आलीशान - बहुत सुन्दर
  पुख्ता - सही
  पायेदार - ऐसी वस्तु जिसके पैर हो ,मज़बूत

- लेखक कह रहा है कि उसके भाई साहब उससे पाँच साल बड़े हैं ,परन्तु तीन ही कक्षा आगे पढ़ते हैं। पढ़ाई करना उन्होंने भी उसी उम्र में शुरू किया था जिस उम्र में लेखक ने किया था। परन्तु शिक्षा जैसे कार्य में बड़े भाई साहब कोई जल्दबाज़ी नहीं करना चाहते थे। वे अपनी शिक्षा की नींव मज़बूती से डालना चाहते थे ताकि वे आगे चल कर अच्छा मुकाम हासिल कर सकें। वे हर कक्षा में एक साल की जगह दो साल लगाते थे और कभी कभी तो तीन साल भी लगा देते थे। उनका मानना था की अगर हम घर की नींव ही सही नहीं डालेंगे तो मजबूत मकान कैसे बनेगा। अर्थात अगर हम शिक्षा के पहलुओं को अच्छे से नहीं समझेंगे तो अपना भविष्य सुन्दर कैसे बनाएंगे।
- मैं छोटा था ,वे बड़े थे। मेरी उम्र नौ साल की थी और वह चौदह साल के थे। उन्हें मेरी तम्बीह और निगरानी का पूरा और जन्मसिद्ध अधिकार था और मेरी शालीनता इसी में थी कि उनके हुक्म को कानून समझूँ।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

- शब्दार्थ

- तम्बीह - डाँट -डपट
  निगरानी - देखरेख
  जन्मसिद्ध - जन्म से ही प्राप्त
  शालीनता - समझदारी
  हुक्म - आज्ञा,आदेश
- लेखक कह रहा है की भाई साहब बड़े थे और वह छोटा था।उसकी उम्र नौ साल की थी और भाई साहब चौदह साल के थे।बड़े होने के कारण उनके पास उसे डाँटने -फटकारने और उसकी देखभाल करने का अधिकार जन्म से ही प्राप्त था। लेखक की समझदारी इसी में थी कि वह उनके हर आदेश को कानून समझें और हर आज्ञा का पालन करें ।
- वह स्वभाव से बड़े अध्ययनशील थे। हरदम किताब खोले बैठे रहते और शायद दिमाग को आराम देने के लिए कभी कॉपी पर ,किताब के हाशियों पर चिड़ियों ,कुत्तों ,बिल्लियों की तस्वीरें बनाया करते थे। कभी कभी एक ही नाम या शब्द या वाक्य दस -बीस बार लिख डालते। कभी एक शेर को बार बार सुन्दर अक्षरों में नक़ल करते। कभी ऐसी शब्द -रचना करते, जिसमे न कोई अर्थ होता, न कोई सामंजस्य।

  अध्ययनशील - पढ़ाई को महत्त्व देने वाला

- हाशियों - किनारों
- सामंजस्य - ताल मेल
- लेखक बता रहा है कि उसके बड़े भाई साहब पढ़ाई को महत्त्व देने वाले थे। वे हर वक्त किताब खोल कर बैठे रहते थे और शायद जब वे पढ़ कर थक जाते थे तब किताबों और कॉपियों के किनारों पर कुत्तों, बिल्लियों और चिड़ियों की तस्वीरें बनाया करते थे। कभी - कभी तो एक ही नाम को ,शब्दों को और वाक्यों को दस - बीस बार लिख देते थे। कभी एक ही शेर को बार - बार सुन्दर अक्षरों में लिखते रहते थे। कभी तो ऐसे शब्दों की रचना करते थे जिनका कोई अर्थ ही नहीं होता और न ही उन शब्दों का आपस में कोई ताल मेल होता।
- मसलन एक बार उनकी कॉपी पर मैंने यह इबारत देखी - स्पेशल ,अमीना ,भाइयों - भाइयों ,दरअसर ,भाई - भाई। राधेश्याम ,श्रीयुत राधेश्याम ,एक घंटे तक - इसके बाद एक आदमी का चेहरा बना हुआ था। मैंने बहुत चेष्टा की कि इस पहेली का कोई अर्थ निकालूँ , लेकिन असफल रहा। और उनसे पूछने का सहस न हुआ। वह नौवीं जमात में थे ,मैं पाँचवी में। उनकी रचनाओं को समझना मेरे लिए छोटी मुँह बड़ी बात थी।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

- **शब्दार्थ**
- **मसलन - उदाहरणतः**
  इबारत - लेख
  चेष्टा - कोशिश
  जमात – कक्षा
- **लेखक उदाहरण देते हुए कहता है कि एक बार उसने बड़े भाई साहब की कॉपी में यह लेख देखा जिसकी शब्द - रचना इस तरह से थी - स्पेशल ,अमीना ,भाइयों -भाइयों ,दरअसल ,भाई - भाई। राधे श्याम ,श्रीयुत राधेश्याम ,एक घंटे तक - और उसके बाद एक आदमी का चेहरा बना हुआ था। लेखक ने बहुत कोशिश की कि वह बड़े भाई साहब के द्वारा लिखे गए इन शब्दों या पहेली को सुलझा सके या इनका कुछ अर्थ निकल सके । लेकिन वह हर तरह से असफल रहा। और भाई साहब से पूछने की हिम्मत नहीं हुई। अब भाई साहब नौवीं कक्षा में थे और वह पाँचवी कक्षा में था। उनके शब्दों का अर्थ जानना या उनकी की गई रचनाओं को समझना उसके लिए आसान बात नहीं थी।**
- **मेरा जी पढ़ने में बिलकुल न लगता था। एक घण्टा भी किताब लेकर बैठना पहाड़ था। मौका पाते ही होस्टल से निकलकर मैदान में आ जाता था और कभी कंकरियाँ उछलता , कभी कागज़ की तितलियाँ उड़ाता और कहीं कोई साथी मिल गया ,तो पूछना ही क्या। कभी चारदीवारी पर चढ़ कर निचे कूद रहे हैं। कभी फाटक पर सवार,उसे आगे पीछे चलाते हुए मोटरकार का आनन्द उठा रहे हैं ,लेकिन कमरे में आते ही भाई साहब का वह रूद्र रूप देख कर प्राण सूख जाते।**

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

संबधित प्रश्न

- भाई साहब मुझसे कितने साल बड़े थे ?
- बड़े भाई साहब किसके प्रति यत्न शील थे ?
- अध्ययनशील कौन थे ?
- हाशियों से आप क्या समझते हैं ?
- कॉपी में क्या लिखा था ?
- पढ़ने में किसका मन नहीं था ?
- किताब लेकर बैठना पहाड़ था—इसका तात्पर्य क्या है ?
- पाठ से मुहाबरों को रेखांकित करके उनका अर्थ लिखो ।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

THANKING YOU

ODM EDUCATIONAL GROUP

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow